DR.MALA KUMARI
ASSISTANT PROFESSOR (GUEST TEACHER)
DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY
A.N.D COLLEGE SHAHPUR PATORY,SAMASTIPUR
B.A –PART 2 PSYCHOLOGY (HONS)
PAPER-4 ,UNIT-5,
CRITICISMS OF FREUDIAN PSYCHOANALYSIS
LECTURE-42

फ्रायडियन मनोविश्लेषण की आलोचनाएँ

CRITICISMS OF FREUDIAN PSYCHOANALYSIS

फ्रायड द्वारा प्रतिपादित 'मनोविश्लेषण' का सम्प्रदाय अपनी लोकप्रियता के कारण काफी चर्चित रहा है |इतना ही नहीं इसका प्रभाव मनोविज्ञान के कुछ ख़ास-ख़ास शाखाओं जैसे-असामान्य मनोविज्ञान,नैदानिक मनोविज्ञान के क्षेत्र में सर्वाधिक रहा है | इसके बावजूद भी इसकी कुछ आलोचनाएँ की गयी है जिनमे निम्नांकित प्रमुख है-

(1) **आँकड़ो का जाँचनीय न होना** (UNVERIFYABILITY OF DATA)- आलोचकों का मत है की फ्रायड ने अपने

सिद्धांतों एवं संप्रत्ययों का विकास लोगो के व्यक्तिगत प्रेक्षणों के आधार पर किया है |इसमें अधिकांशतः उनके अपने व्यवहार के विश्लेषण पर आधारित थे |इसके आलावा रोगियों द्वारा जो कुछ भी कहे गए ,उस पर वे आँख मूंदकर विश्वास किये और अपने सिद्धांत का उसे आधार बनाया |इन सभी तरह के प्रेक्षणों से जो आँकड़े उन्हें मिले ,उनका सत्यापन करना मुश्किल है |आलोचकों का यह भी मत है की स्नायुविकृत लोगो के मानसिक संघर्ष ,स्वप्न आदि के विश्लेषण से सामान्य व्यक्ति के मनोविज्ञान को समझना एक टेढ़ी खीर है |उसके तथ्यों को मात्र विश्वास पर स्वीकार किया जा सकता है न की प्रयोगात्मक सत्यापन के आधार पर |

(2) **असत्यापित सैद्धांतिक संप्रत्यय**(UNVERIFIED THEORETICAL CONCEPTS) फ्रायड के सिद्धांत एवं प्राक्कल्पनाओ के विशेष स्वरूप के कारण उनको सत्यापित करना तो मुश्किल है |फलतः उन्हें मात्र एक असत्यापित सैद्धांतिक संप्रत्यय के रूप में ही स्वीकार करने की बाध्यता है | जैसे –पराहं(SUPER EGO)तथा मानसिक ऊर्जा(PSYCHIC ENERGY)का संप्रत्यय ऐसा ही है

जिसकी प्रयोगात्मक जाँच करके उनकी वैधता को स्वीकृत या अस्वीकृत करना मुश्किल है |

(3) कल्पित संप्रत्यय (FICTIONAL CONCEPTS)-कुछ आलोचकों का मत है की फ्रायड जरुरत से ज्यादा पुराण विद्या (MYTHOLOGY)पर निर्भर थे |उसका सबसे उत्तम उदाहरण उनके द्वारा प्रतिपादित मातृ मनोग्रंथि है| आलोचकों ने फ्रायड के इस दावे की हंसी उड़ाई है की एक अपरिपक्व बालक के अचेतन में अपने माँ से लैंगिक सम्बन्ध के जन्म-जात विचार होते है |ऐसी हँसी उनके अन्य संप्रत्ययो जैसे –बधिया की चिंता (CASTRATION ANXIETY),शिश्न ईर्ष्या(PENIS ENVY),पितृ मनोग्रंथि(ELECTRA COMPLEX) आदि की भी उड़ाई गयी है |आलोचकों का कहना है की फ्रायड के ये सारे संप्रत्ययों का आधार कोई वैज्ञानिक तथ्य न होकर पौराणिक कथाएँ है जो सर्वथा अमान्य है |

(4) **परिमापन की कमी** (LACK OF QUANITIFICATION)- यह आलोचना स्किन्नर(1954)द्वारा की गयी है |स्किन्नर का मत है की फ्रायड ने किसी भी मानव व्यवहार के स्वरूप को कोई निश्चित आयाम नहीं बतलाया है |वे मात्र स्मृति ,विचार आदि के बारे में बातचीत किये है

|इसके किसी भी इकाई का वर्णन नहीं किया है जिसका सही-सही मापन किया जा सके |उनके कुछ संप्रत्यय जैसे लिबिडो(LIBIDO) या कैथेक्सिस ऐसे प्रमुख संप्रत्ययों में से है जिसे आयामहीन(DIMENSIONLESS) कहा जा सकता है |फलस्वरूप उनका मापन संभव नहीं है |जब उन्हें मापना ही संभव नहीं है ,तो उसे आधार बनाकर किसी प्रकार का सामान्यीकरण करना अर्थहीन है |

(5) **मध्यवर्ती चर** (INTERVENING VARIABLES)-यह आलोचना भी स्किन्नर द्वारा ही किया गया है |स्किन्नर का मत है की फ्रायड मानव व्यवहारों की व्याख्या करने के लिए मध्यवर्ती चरो की ओर जरुर झुके परन्तु उनके मौलिक कारणों की उपेक्षा करके |जैसे –फ्रायड की व्याख्या के अनुसार व्यक्ति में दोष भाव का कारण पराहं (जो स्वभावतः एक मध्यवर्ती चर है |)का दंड होता है |ऐसा तभी हो सकता है जब व्यक्तियों में दोष भाव का कारण बाल्यावस्था में दुश्चिंता से अत्यधिक अनुबंधन हो जिसका कभी भी विलोपन नहीं हुआ हो |

(6) **यौन पर अत्यधिक बल देना** (overem phasis upon sex)फ्रायड की आलोचना इसलिए भी की गयी है की उन्होंने मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांतों में जरुरत से ज्यादा

लैंगिक संबंधो पर बल डाला है |फ्रायड का यह दावा है की लैंगिक इच्छाएँ शिशुओं में जन्म से ही मौजूद रहती है ,की आलोचना कई लोगो द्वारा की गयी है |इन आलोचनाओ के बावजूद फ्रायड के मनोविश्लेषण सम्प्रदाय का योगदान महत्वपूर्ण रहा है |आज के मनोवैज्ञानिक विशेषकर नैदानिक मनोविज्ञान तथा व्यक्ति के मनोविज्ञान के मनोविज्ञानी उनके योगदानों के प्रति काफी आभारित है और उनके कई संप्रत्यय एवं सिद्धांत आधुनिक चिन्तन के प्रमुख श्रोत है |